'डाक पंजियन सं. Jaipur city/223/2015-17
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 21 अंक 11 19 अगस्त, 2017 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

सिपाही से सेनापति तक की यात्रा को नमन

इस पखवाड़े में हम सब ने ऐसे दो महापुरुषों को उनके जन्म दिवस पर याद किया जिन्होंने अपनी यात्रा सिपाही से प्रारम्भ की और सेनापति बन हम सबके श्रद्धेय व प्रेरणा पुरुष बन गए। 30 जुलाई को संघ के स्वयंसेवक के रूप में आदर्श व्यक्तित्व एवं कालांतर में पूज्य तनसिंह जी की विरासत संभालने वाले पूज्य नारायणसिंह जी का अवतरण दिवस था वहीं श्रावण शुक्ला चतुर्दशी तद्नुसार 6 अगस्त को मध्यकालीन भारत में क्षत्रियत्व के आदर्श प्रतिमूर्ति दुर्गादास जी का अवतरण दिवस था। दोनों ने ही अपनी यात्रा सामान्य स्वयंसेवक या सिपाही के रूप में प्रारम्भ की एवं उस मार्ग के शीर्ष पर पहुंच कर साथ चलने वालों को नेतृत्व दिया। दोनों की ही सिपाही से सेनापति तक की यह यात्रा अनुकरणीय एवं प्रेरणादायी है। इस पखवाड़े में कृतज्ञ समाज ने दोनों ही महापुरुषों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए जयंती मनाई।

'शिष्य भाव के आदर्श थे नारायणसिंह जी'

विगत दो हजार वर्षों में गलत मार्गदर्शन के कारण हमारे नेतृत्व का विवेक लुप्त हो गया और हमने हमारे नेतृत्व (राजाओं) को देखकर आचरण किया। परिणाम स्वरूप हम क्षत्रियत्व से च्युत हुए। हमारा ईश्वरीय भाव समाप्त हुआ। सब क्षमताएं होते हुए भी विवेक के अभाव में पिछड़ते गए। पूज्य तनसिंह जी ने विवेक जागृत करने का प्रयास किया। उनके उस प्रयास की आधार भूमि बने नारायणसिंह जी। वे विवेकशील एवं तर्कशक्ति वाले व्यक्ति थे। 18-19 वर्ष की उम्र में मार्ग चुना और 29 वर्ष की आयु में हम सब के मार्गदृष्टा बन गए। पूज्य तनसिंहजी के दीप बन गए। नारायणसिंह जी शिष्य भाव के आदर्श थे। पूज्य तनसिंह जी की चाह थी कि संघ का स्वयंसेवक राष्ट्रपति से लेकर चपरासी तक का दायित्व वहन करने की क्षमता वाला होना चाहिए और पूज्य नारायणसिंह उनकी इस चाह का मूर्तिमान स्वरूप थे। 30 जुलाई को संघशक्ति में प्रतिवर्ष की भांति आयोजित पारिवारिक स्नेह मिलन को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही।

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

दुर्गा बाबा से मांगा समाज चरित्र

'दुर्गादास जी का 80 वर्ष, 3 माह और 28 दिन का जीवन मध्ययुग में आदर्श क्षत्रिय के जीवन का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। दुर्गादास जी भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गीता में बताए गए क्षत्रिय के सातों गुणों के जीवन्त स्वरूप थे। आज समाज में सर्वाधिक आवश्यकता दुर्गादास जी जैसे समाज चरित्र की है। इसी आवश्यकता की पूर्ति में श्री क्षत्रिय युवक संघ लगा हुआ है।' उपरोक्त बातें संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह सरवड़ी ने राव शेखाजी शाखा, सीरसी रोड जयपुर में आयोजित दुर्गादास जयंती समारोह को संबोधित करते हुए कही। कार्यक्रम का संचालन जयपुर के संभाग प्रमुख विक्रमसिंह सिंघाणा ने किया।

कार्यक्रम में अड़ीसाल सिंह लोहरवाड़ा ने पूज्य तनसिंह जी रचित सहगायन 'मेरे वीर दुर्गादास लौट के आ रे....' गाया तथा स्वयंसेविका नील कंवर महणसर ने 'क्षत्रिय कुल में' प्रार्थना गाई, केन्द्रीय शिविर कार्यालय प्रमुख राजेन्द्रसिंह बोबासर ने संघ का संक्षिप्त परिचय दिया। मारूड़ी

(बाड़मेर) में जुगतसिंह के कृषि फार्म पर चल रहे प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर के दौरान 6 अगस्त को तारातरा महन्त प्रतापपुरी जी तथा वरिया महंत नारायण भारती जी के सान्निध्य में दुर्गादास जयंती मनाई गई। समारोह को संबोधित करते हुए प्रतापपुरी जी ने कहा कि दुर्गादास राठौड़ जैसे महापुरुषों की जयंतियां समाज में प्रेरणा भरने का कार्य करती हैं, साथ ही उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ की उर्ध्वगामी साधना को ईश्वर प्राप्ति का सहज एवं सरल मार्ग बताया।

➡ (शेष पृष्ठ 6 पर)

पूर्व सीएम अशोक गहलोत पहुंचे संघशक्ति

कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव एवं पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत एक अगस्त को सायं संघ शक्ति पहुंचे। संघ प्रमुख श्री के स्वास्थ्य की कुशल क्षेम पूछने पहुंचे पूर्व मुख्यमंत्री लगभग एक घंटे तक संघशक्ति रुके एवं संघशक्ति के केन्द्रीय हॉल में स्थित पूज्य तनसिंह जी की तस्वीर पर पुष्प अर्पित किए। विगत आठ-दस वर्षों से लगातार गहलोत माननीय संघ प्रमुख श्री के सम्पर्क में हैं एवं मिलते रहते हैं लेकिन संघ कार्यालय पहली बार आए थे। उनके साथ राजस्थान बीज निगम के पूर्व अध्यक्ष धर्मेन्द्रसिंह राठौड़ भी थे। मुलाकात के दौरान गुजरात के आर्य समाजी संत धर्मबंधु जी, वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह सरवड़ी, संचालन प्रमुख लक्ष्मण सिंह बेण्यांकाबास, केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ व अन्य स्वयंसेवक भी उपस्थित रहे।

गौरव सेनानी प्रकोष्ठ का गठन

विगत 5 अगस्त को संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में संघ के स्वयंसेवकों में से चुनिंदा भूतपूर्व सैनिकों को आमंत्रित कर संघ के गौरव सेनानी प्रकोष्ठ को लेकर चर्चा की गई। संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में संपन्न बैठक में समाज के पूर्व सैनिकों एवं अर्द्धसैनिक बलों से सेवानिवृत समाज बंधुओं को संगठित कर उनकी शक्ति को समाज के हित में उपयोग करने के लिए प्रकोष्ठ का गठन किया गया। पूर्व सैनिकों की कार्यशालाएं आयोजित कर सरकार द्वारा दी जा रही सुविधाओं की जानकारी देने एवं पूर्व सैनिकों व अन्य युवाओं के लिए रोजगार के अवसरों की जानकारी देने के लिए विषय वस्तु तैयार करने का दायित्व कर्नल हिम्मतसिंह पीह को दिया गया। साथ ही उपस्थित पूर्व सैनिकों को अपने-अपने क्षेत्र के पूर्व सैनिकों से सम्पर्क कर उनसे संबंधित सूचनाएं एकत्र करने का दायित्व सौंपा गया। ऐसे सभी प्रयासों का समन्वय करने की जिम्मेदारी वरिष्ठ स्वयंसेवक कानसिंह बोघेरा एवं कर्नल हिम्मतसिंह पीह को सौंपी गई।

हमारे गांव हमारी जड़

राजपूत की पहचान उसके गांव से होती है। आजकल व्यवसाय, शिक्षा आदि आवश्यकताओं के कारण गांव छोड़कर शहरों में रहने वाले राजपूत परिवारों की नई पीढ़ी अपनी इस पहचान से अनभिज्ञ होती जा रही है। गांवों से कटना एक प्रकार से अपनी जड़ों से कटना है क्यों कि हमारी वंश वृक्ष की जड़ों की ओर जाने पर हमें ज्ञात होता है कि हमारे ही किसी पूर्वज ने उस गांव का रक्षण, पोषण किया है जिसे हम अपना गांव कहते हैं। ऐसे में हमारी जड़ों के प्रतीक उस गांव को जान सकें इसके लिए पथ प्रेरक के 20वें वर्ष के प्रवेश के साथ ही एक नया स्तंभ शुरू गया है - **'हमारे गांव-हमारी जड़।'** इसमें श्रृंखलाबद्ध रूप से प्रति अंक एक गांव का परिचय छापा जा रहा है। इस बार प्रस्तुत है चुरू जिले की बीदासर तहसील के गांव रेड़ा की कहानी।

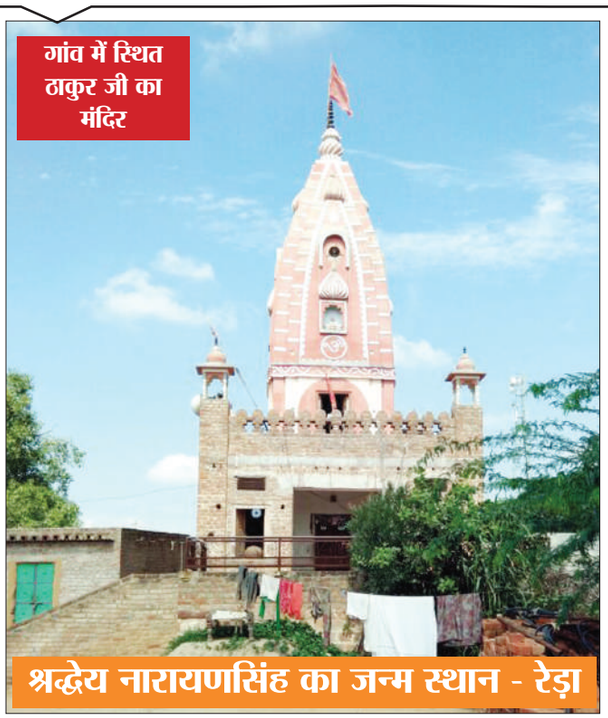

गांव में स्थित ठाकुर जी का मंदिर

श्रद्धेय नारायणसिंह का जन्म स्थान - रेड़ा

कुछ स्थान महापुरुषों से संबंधित होने के कारण महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं और ऐसे स्थान उन महापुरुषों से प्रेरणा लेने वाले लोगों के लिए श्रद्धा के केन्द्र बन जाते हैं। ऐसा ही स्थान है चुरु जिले की बीदासर तहसील का गांव रेड़ा। यह वही स्थान है जहां श्री क्षत्रिय युवक संघ के तृतीय संघ प्रमुख पूज्य नारायणसिंह का 30 जुलाई 1940 को अवतरण हुआ। गांव के नामकरण के बारे में प्रचलित बातों के अनुसार चुरु जिले के हरासर गांव के दो बीदावत बंधु शेरसिंह व मनरुपसिंह अपना नया आसरा ढूंढ़ने निकले। उन दिनों रेड़ा गांव से पूर्व में बसे इंदा राजपूत अकाल के कारण पलायन कर चुके थे। उनकी जगह कालांतर में छिरंग जाति के जाट आकर बस गए। शेरसिंह व मनरुपसिंह अपने घोड़ों पर उधर से निकले तो उनके सामान की पोटली इस गांव में गिर गई। दोनों भाईयों ने इसे शगुन माना एवं निर्णय लिया कि 'सामान को यही रेड़ दें।' इसी वाक्यांश से गांव का नामकरण रेड़ा हो गया और गांव के जाटों ने दोनों भाईयों को आदर सहित अपने गांव का जागीरदार स्वीकार किया। आज गांव में इन्हीं दोनों भाईयों के वंशज निवास करते हैं। एक भाई के वंशज अगुणे बास में व एक के आथुणे बास में।

तहसील मुख्यालय से लगभग 100 किमी दक्षिण पश्चिम में, श्री डूंगरगढ़ सुजानगढ़ से 50 किमी दक्षिण में एवं नोखा से 50 किमी पूर्व में स्थित गांव रेड़ा रेतीले टीलों के बीच बसा है। बीकानेर, श्री डूंगरगढ़ व नोखा से गांव के लिए सीधी बस सेवा उपलब्ध है। बीदासर नोखा मार्ग पर स्थित छोटी कातर गांव से भी गांव के लिए छोटे वाहन दिन भर उपलब्ध रहते हैं। गांव की कुल आबादी 2100 है जिसमें राजपूत व जाट अधिक संख्या में हैं। राजपूतों के 120 घर व जाटों के 100 घर हैं। इनके अलावा अन्य जातियों के भी घर हैं। गांव के सभी लोग आपसी प्रेम एवं सौहार्द से रहते हैं। गांव में रहने वाले अधिकांश लोगों का व्यवसाय खेती है। गांव में मुख्य रूप से बारिश ऋतु में खरीफ की फसल होती है लेकिन नलकूप सिंचाई की उपलब्धता के कारण अब रबी की फसल भी अच्छी मात्रा में बोई जाती है। गांव में मुख्य रूप से मूंगफली, गेहूं, चना, मैथी, ईसबगोल, मोठ, बाजरा, ग्वार आदि फसलें बोई जाती हैं। प्रारम्भ में गांव में शिक्षा का बोलबाला कम रहा इसलिए सरकारी नौकरी कम ही लोग कर पाए। श्रवणसिंह, पाबूसिंह, दीपसिंह, उम्मेदसिंह आदि भारतीय सेना में नौकरी कर चुके हैं। जाटों में भी दो तीन लोग सेना में नौकरी कर चुके हैं। यह गांव गिरवरसर ग्राम पंचायत में शामिल है। गांव के भंवरसिंह व माधुसिंह सरपंच रह चुके हैं। गांव में ठाकुरजी एवं शिवजी के दो मंदिर हैं। दो बड़े मंदिरों के अलावा अन्नजी व झुंझारजी नाम से दो भोमियाजी के थान भी गांव के लोगों की आस्था के केन्द्र हैं। अन्नजी गांव के ही राजपूत थे जो लूटेरों से संघर्ष करते हुए काम आए थे। गांव के ही ठाकुर शेरसिंह ने भी बिना सिर लड़ते हुए लुटेरों को खदेड़ा था, उन्हे ही झुंझार जी के नाम से पूजा जाता है। प्रारम्भ में हुए उल्लेख अनुसार गांव में आकर बसने वाले शेरसिंह जी के वंशज हरिसिंह जी के यहां 30 जुलाई 1940 को पूज्य नारायणसिंह जी का जन्म हुआ था। वे परिवार में चार भाइयों में सबसे बड़े थे। पूज्य श्री की प्रारम्भिक शिक्षा गांव में ही हुई एवं आगे की पढ़ाई के लिए बीकानेर गए। परिवार की जिम्मेदारी के कारण मैट्रिक पास कर अध्यापक की नौकरी प्रारम्भ की लेकिन पूज्य तनसिंह जी के सम्पर्क में आने के बाद उन्हें अपने मनुष्य जीवन के प्रति अपनी जिम्मेदारी का अहसास हुआ और मात्र 19 वर्ष के उम्र में नौकरी छोड़कर सदा-सदा के लिए पूज्य तनसिंह जी के होकर हम सब के मार्गदर्शक बन गए। कालांतर में उनका परिवार श्री गंगानगर जिले की श्री विजयनगर तहसील के गांव चक दो डीएएम में बस गया। आज भी उनके दोनों पुत्रों का परिवार वहीं रहता है एवं समय-समय पर गांव भी आते रहते हैं। 30 जुलाई 2015 को पूज्य श्री की 75वीं जयंती इसी गांव में बड़े समारोह के रूप में मनाई थी तब ही अनेक लोगों ने इस गांव के दर्शन कर स्वयं को सौभाग्यशाली समझा। पूज्य तनसिंह जी एकाधिक बार रेड़ा पधारे थे एवं इसके अलावा पूज्य नारायणसिंह जी के पारिवारिक समारोहों में वर्तमान संघ प्रमुख श्री सहित अनेक वरिष्ठ स्वयंसेवक कई बार पधार चुके हैं।

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

निर्गुण ब्रह्म संत दादू महाराज

स्वरूपसिंह झिंझनियाली

कर्णावटी नगर (वर्तमान अहमदाबाद) में ईश भक्त नागर गौत्रिय ब्राह्मण लोधीराम को एक महात्मा ने वर दिया था कि तुम्हें एक प्रभु का स्वरूप बालक मिलेगा। कुछ समय पश्चात फाल्गुन शुक्ला अष्टमी गुरुवार विक्रम संवत् 1601 पुष्य नक्षत्र के समय प्रातःकाल साबरमती नदी में कमल पुष्पों के सिंहासन पर बैठे पानी में बहते अद्भुद बालक को किनारे पर आते देख लोधीराम को सन्त वाक्य याद हो आए। उन्होंने बालक को गोदी में उठा लिया तथा देखते ही देखते वह सिंहासन तुरन्त ही जलधारा में अन्तर्ध्यान हो गया। इस अवतरित बालक को लोधीराम दम्पति ने पुत्रवत पालना शुरू किया। जब बालक पांच वर्ष का हो गया तो पंडित गोविंदराम के यहां शिक्षा ग्रहण करने भेजा गया। बालक में देने की प्रवृत्ति होने के कारण उसका नामकरण 'दादू' किया गया। दादू जब 11 वर्ष के हो गए तबकि घटना है कि वे अहमदाबाद के कांकरिया सरोवर की पाल पर कुछ बालकों के साथ खेल रहे थे। वहां पर भगवान स्वयं एक वृद्ध व्यक्ति के रूप में प्रकट हुए। दादू ने उन्हें देखकर प्रणाम करते हुए उनका चरण वन्दन किया। वृद्ध ने दादू के सिर पर वरदहस्त रखा और दादू को दिव्य दृष्टि मिल गई। वे भगवान को पहचान गए। भगवान ने दादू जी को उपदेश स्वरूप उपासना पद्धति बताई और कहा कि जो मुझे इस तरह जानेगा वह मुझे ही प्राप्त होगा। उनकी यह उपासना पद्धति निर्गुण ब्रह्म मानी जाती है। भगवान ने उन्हें यह आदेश दिया कि तुम्हें राजपूताना (वर्तमान राजस्थान) में जाकर समभाव पूर्वक वहां की रियासतों के शासकों, जमीदारों व आम जनता को सन्मार्ग का उपदेश देकर अनाचार आदि दोषों से मुक्त कर हिंसा एवं अन्ध विश्वासों से छुटकारा दिलाना है और यह उपदेश व आदेश देकर वे अर्न्तध्यान हो गए। इस घटना के उपरान्त दादूजी का जीवन ही पलट गया वे भगवद् भजन में लीन रहने लगे। जब दादू जी 18 वर्ष के हो गए तब उन्होंने घर बार त्याग दिया एवं भगवान के आदेश की पालना में आबू पर्वत होते हुए राजपूताना में प्रवेश किया। उन्होंने राजपूताना में विशेषतः ग्रामीण आंचल में स्थान-स्थान पर भ्रमण करते हुए निर्गुण ब्रह्म का परिचय व उपदेश दिया। अनेक स्थानों का भ्रमण करते हुए वे मारवाड़ के परबतसर (नागौर) के पास करडाला ग्राम की पहाड़ी पर केर के पेड़ के नीचे धूणा लगाकर साधना करने लगे। यहां पर उन्होंने 6 वर्ष तक कठोर तपस्या की। यहां से दादू जी मोरड़ा एवं सांभर गए। सांभर में वे 12 वर्ष रहे तथा अपने मठ को स्थापित करने के लिए कई लोगों एवं पंथों से वैचारिक संघर्ष करना पड़ा एवं अन्त में उनके विरोधियों ने हार मानी। 14 वर्ष तक दादूजी आमेर में बिराजे एवं समय-समय पर अन्य स्थानों का भ्रमण भी किया। अन्त में नारायणा (दूदू के पास नारेणा) के कच्छावा जागीरदार नारायणसिंह के आमंत्रण पर यहां आए और तालाब के किनारे आश्रम बनाकर ताउम्र रहे। नारायणसिंह अपनी प्रजा सहित हमेशा दादूजी की सेवा में तत्पर रहे। दादूजी विक्रम संवत् 1660 ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी शनिवार 58 वर्ष की उम्र में नरेना में ही ब्रह्मलीन हुए। यहां उनके शिष्यों ने बड़ा दादू द्वारा बनवाया है जहां उनके मानने वाले वर्ष भर आते रहते हैं। दादूजी का जीवन चरित्र विलक्षण एवं चमत्कारी रहा है। दादूजी निर्गुण ब्रह्म और निराकर को पुष्ट करने के लिए अवतरित हुए थे। उन्होंने अपनी मौखिक वाणी से ब्रह्म के प्रति जनचेतना जगाने के लिए राजपूताना के ग्रामीण अंचलों में स्थान-स्थान पर भ्रमण करते हुए उपदेशामृत दिया। उनके उपदेश 'दादूवाणी' के नाम से विख्यात हैं।

शिविरों की श्रृंखला में जुड़े ग्यारह और शिविर

श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविरों की श्रृंखला अनवरत चल रही है। 29 से 31 जुलाई के बीच गुजरात के भाल प्रांत के वल्लभीपुर में स्थित राजपूत छात्रावास में श्री क्षत्रिय युवक संघ का तीन दिवसीय प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ, जिसमें आस-पास के क्षेत्र के लगभग 100 राजपूत बालकों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन भागीरथ सिंह सांडखाखरा ने किया। गुजरात के ही मोरचंद प्रांत का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर जसपरा गांव में 5 से 7 अगस्त के बीच सम्पन्न हुआ। इस शिविर में 110 बालकों ने प्रशिक्षण लिया तथा इसका संचालन अर्जुनसिंह मोरचंद ने किया। शिविर के दौरान ही रक्षा बंधन एवं दुर्गादास जयंती भी मनाई गई। जोधपुर संभाग के शेरगढ़ प्रांत का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर केतु हामां में 4 से 7 अगस्त के बीच सम्पन्न हुआ। इस शिविर में संख्या लगभग 250 रही। संचालन महेन्द्रसिंह गूजरावास ने चन्द्रवीर सिंह भाळू, मूलसिंह बेतीना, हरिसिंह ढेलाणा, सुमेरसिंह चौरड़िया, भीखसिंह सेतरावा आदि के सहयोग से किया। रक्षा बंधन के अवसर पर शिविर में जोधपुर सांसद गजेन्द्रसिंह महरोली, शेरगढ़ विधायक बाबूसिंह राठौड़, बालेसर के पूर्व प्रधान भंवरसिंह सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। जोधपुर के ही तनावड़ा में एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 4 से 7 अगस्त तक पार्श्वनाथ जैन मंदिर में आयोजित हुआ, जिसमें 110 राजपूत बालकों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन रूपसिंह परेऊ ने भवानी सिंह पीलवा के सहयोग से किया। शिविर के अंतिम दिन शिविरार्थियों को संघ के केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ।

बाल शिविर भिंयाड़

पाली के दुर्गादास छात्रावास में 4 से 7 अगस्त तक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। शिविर में संख्या 135 रही, जिसमें से 110 बालक पाली शहर से थे। शिविर का संचालन अर्जुनसिंह देलदरी ने किया। शिविर में सहयोगी के रूप में महोब्बतसिंह धींगाणा, भगवान सिंह राजकियावास, जालमसिंह अजीत, महेन्द्रसिंह, प्रेमसिंह जाड़न, जयेन्द्रसिंह, गुलाबसिंह, हनुवन्तसिंह गादेरी आदि उपस्थित थे। शिविर के दौरान ही दुर्गादास जयंती 6 अगस्त को केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा तथा सन्त समतारामजी के सान्निध्य में मनाई गई।

बीकानेर संभाग के कोलायत मंडल के ग्राम मेड़ी का मगरा में 4 से 7 अगस्त के बीच प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। मेड़ी का मगरा ग्राम अपने नाम के अनुरूप ही अपने आसपास के क्षेत्र से ऊंचाई पर बसा हुआ है, जहां से 15 से 45 किमी तक का क्षेत्र देखा जा सकता है। शिविर का संचालन राजेन्द्रसिंह आलसर ने गुलाबसिंह आशापुरा, रेवन्तसिंह जाखासर, कुलदीपसिंह करणीपुरा, करणीसिंह भेळू, देवीसिंह करणीपुरा, हड़वन्त सिंह आशापुरा के सहयोग से किया। मेघसिंह देवड़ा, शैतानसिंह, माणकसिंह, खेतसिंह, नखतसिंह, उम्मेदसिंह, नारायणसिंह मेड़ी का मगरा ने शिविर की व्यवस्था में सहयोग किया।

जैसलमेर के देवतकी क्षेत्र के अर्जुना गांव में 5 से 8 अगस्त तक प्राथमिक प्रशिक्षण का आयोजन हुआ। शिविर का संचालन पदमसिंह रामगढ़ ने किया। आसपास के लगभग 25 गांवों में 130 राजपूत बालकों ने शिविर में प्रशिक्षण लिया। गोवर्धनसिंह अर्जुना तथा देरावर सिंह अर्जुना द्वारा शिविरार्थियों को देवतकी क्षेत्र के स्थानीय इतिहास से अवगत कराया गया। शिविर में तारसिंह, पूनमसिंह, महेन्द्रसिंह, खूमसिंह, हुकमसिंह, डेडूसिंह आदि ग्रामवासियों ने सहयोग किया। जैसलमेर के ही तेजमालता गांव में 5 से 8 अगस्त तक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ, जिसमें क्षेत्र के विभिन्न गांवों से 200 बालकों तथा युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन बाबूसिंह बैरसियाला ने किया। संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा एवं प्रांत प्रमुख हरिसिंह बैरसियाला भी शिविर में उपस्थित रहे। बाड़मेर के मारूड़ी ग्राम में जुगतसिंह के कृषि फार्म पर 5 से 8 अगस्त तक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ, जिसका संचालन छगनसिंह लूणू ने किया। शिविर में 215 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया, जिन्हें प्रांत प्रमुख

प्रा.प्र.शि. केतु हामां

महिपालसिंह चूली सहित अनेक वरिष्ठ स्वयंसेवकों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। शिविर के दौरान 6 अगस्त को संत प्रतापपुरी जी एवं नारायण भारती जी के सान्निध्य में दुर्गादास जयंती भी मनाई गई। इस बीच जयपुर तथा भिंयाड़ में दो बाल शिविर भी 6 से 7 अगस्त को सम्पन्न हुए। जयपुर में बाल शिविर संघ मुख्यालय संघ शक्ति भवन में आयोजित हुआ, जिसमें शहर से 5-11 आयु वर्ग के लगभग 70 बालकों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन गजेन्द्रसिंह आऊ ने सुधीर सिंह ठाकरियावास के सहयोग से किया। शिव प्रांत का बाल शिविर भिंयाड स्थित मातेश्वर विद्या मंदिर के प्रांगण में संपन्न हुआ। शिविर का संचालन प्रांत प्रमुख राजेन्द्र सिंह भिंयाड ने किया। संख्या लगभग 50 रही। शिविर के दौरान बालकों को इतिहास की जानकारी दी गई तथा योगासनों का भी अभ्यास करवाया गया। इस प्रकार 29 जुलाई से 8 अगस्त तक 10 दिन की अवधि में 11 शिविरों का आयोजन हुआ, जिसमें लगभग डेढ हजार राजपूत बालकों एवं युवाओं ने क्षात्र वृत्ति का प्रशिक्षण प्राप्त किया। वरिष्ठ स्वयंसेवकों के निर्देशन में अपने स्वधर्म को समझा एवं क्षत्रियोचित संस्कारों को स्वयं में ढालने का अभ्यास किया।

फलौदी नाचना प्रांत का स्नेहमिलन

6 अगस्त को राजपूत सराय फलौदी में प्रांत प्रमुख गणपतसिंह अवाय के निर्देशन में फलौदी नाचना प्रांत का स्नेहमिलन संपन्न हुआ। स्नेहमिलन में फलौदी, खेतुसर, बैंकटी, अखाधना, टेकरा, बारू आदि शाखाएं प्रारम्भ करने को लेकर चर्चा की गई। सत्र में आगामी समय में लगने वाले शिविरों की व्यवस्था, प्रचार एवं संख्या को लेकर चर्चा की गई।

शाखाओं व शिविरों में रक्षा बंधन मनाया

कच्छ प्रांत की पांध्रो शाखा में स्वयंसेवकों ने केशरिया ध्वज को व परस्पर एक-दूसरे को राखी बांधकर रक्षा बंधन पर्व हर्षोल्लास से मनाया। प्रांत प्रमुख तनसिंह बिजावा ने बताया कि ध्वज के राखी बांधकर हम हमारी क्षात्र परम्परा की रक्षा का संकल्प लेते हैं वहीं परस्पर राखी बांधकर एक-दूसरे का सहयोगी बनाने का संकल्प लेते हैं।

संघ के गुड़ामालानी प्रांत की बेसलनियो का तला शाखा में प्रांत प्रमुख गणपतसिंह बूठ के निर्देशन में रक्षा बंधन का पर्व मनाया गया। सभी ने एक-दूसरे को रक्षा सूत्र बांधे एवं प्रांत प्रमुख ने इस रक्षा सूत्र का महत्त्व बताया। इसके अलावा भी अनेक शाखाओं एवं इस दौरान चल रहे शिविरों में रक्षा बंधन का पर्व मनाए जाने के समाचार मिले हैं।

IAS/RAS
VARDHAN IAS ACADEMY
वर्द्धन आई.ए.एस. अकेडमी
First Floor, Shri Ram Plaza, B-5, Nityanand Nagar, Gandhi Path, Vaishali Nagar-302 021
Mob. 8107456757, 9116824677

आदर्श सीनियर सैकण्डरी स्कूल
सोलंकियातला, तहसील, शेरगढ़, जिला-जोधपुर
■ पांचवी, छठी, सातवीं, आठवीं व नवी फेल या पास साक्षर व्यक्ति एनआईओएस बोर्ड से सीधे दसवीं पास करें। 10वीं पास सीधे 12वीं पास करें।
■ कोई टी.सी. की जरूरत नहीं, केवल जन्म प्रमाण-पत्र चाहिए।
■ उम्र की कोई बाध्यता नहीं, 14 वर्ष से अधिक आयु का कोई भी फार्म भर सकता है।
■ B.A., B.Com, M.A., M.A. (योग) व राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से 10वीं व 12वीं के प्रवेश चालू हैं।
नोट : सरकारी नौकरी हेतु, पूर्व सैनिकों हेतु, सरपंच, राशन डीलर, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा सहयोगिनी आदि बनने हेतु, ड्राईविंग लाइसेंस बनवाने, राजनीति, बिजनेस, विदेश जाने आदि कार्यों हेतु डिग्री हासिल करने का सुनहरा अवसर।
NIOS Code : 170347
सांगसिंह राठौड़ : 9783202923

संपादकीय

गांधीवादी आंदोलन और हम

गांधीजी का नाम शायद हम लोगों में से कइयों को पसंद नहीं आए क्यों कि हम मान बैठे हैं कि आजादी का आंदोलन अंग्रेजों के साथ-साथ हमारे भी कुछ लोगों के खिलाफ था या गांधीजी के संरक्षण में जो व्यवस्था पनपी उसने हमारे साथ अन्याय किया। पहला कारण तो कोई वजूद नहीं रखता लेकिन दूसरा कारण जरूर सच्चाई के निकट है लेकिन उसका भी कारण हम गांधीजी को नहीं मान सकते क्यों कि उनके संरक्षण में पनपी व्यवस्था उनके स्वयं के प्रति भी ईमानदार नहीं रही। खैर यह पृथक विषय है लेकिन हम तो इस आलेख में गांधीजी द्वारा वर्तमान युग को उपलब्ध करवाए उस हथियार की बात कर रहे हैं जिसके बल पर वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में अनेक लोगों ने अपनी मांगे मनवाई हैं। अन्यों की बात क्यों करें यदि हम हमारे स्वयं के घर को देखें तो भी आजादी के बाद सरकार की नीतियों के खिलाफ हुआ हमारा भू-स्वामी आंदोलन गांधीवादी तरीके से लड़ा गया और तत्कालीन हिन्दूस्तान के प्रधानमंत्री को हमारे नेताओं के साथ बैठकर समझौता करना पड़ा। लेकिन विडंबना यह है कि हमारे समाज के लोगों ने अभी भी आजादी के 70 वर्षों के बाद भी उस तरीके को आत्मसात नहीं किया जिसे अपना कर निकट इतिहास में हमारे अपने पूर्वजों ने पुष्ट किया। आज भी हम केवल मार-काट के मध्ययुगीन तरीकों में विश्वास करते हैं और अपने पक्ष में अनेक तर्क गढ़ लेते हैं जिनका वास्तव में कोई आधार नहीं होता। हिंसात्मक आंदोलन के समर्थक लोग अपने पक्ष में गुर्जर आंदोलन, गुजरात के पाटीदार आंदोलन, हरियाणा के जाट आंदोलन के उदाहरण देते हैं लेकिन गंभीरता से विचार करें तो पाएंगे कि ये आंदोलन तात्कालिक रूप से सफल होते दिखे जरूर लेकिन लाभ-हानि के तराजू पर हानि ही अधिक हुई। जाट आरक्षण आंदोलन की बात करें तो उनका पहला आंदोलन, जब राजस्थान में वाजपेयी जी द्वारा उनके आरक्षण की घोषणा की गई, पूर्ण रूप से कुटनीतिक आंदोलन था। बिना विशेष प्रचार के अपनी राजनीतिक शक्ति के बल पर आरक्षण हासिल किया जबकि हरियाणा में इन्हीं के द्वारा किया गया हिंसक आंदोलन इनको कुछ हासिल नहीं करा पाया। उल्टा केन्द्र सरकार ने कानून बना दिया कि संसद की मंजूरी के बिना किसी जाति को अन्य पिछड़ा वर्ग में शामिल नहीं किया जा सकता। ऐसा ही गुर्जरों के साथ हुआ। 70 समाज बंधुओं के मारे जाने के बावजूद कानूनी प्रक्रिया के सामने हार हुई। गुजरात का पाटीदार आंदोलन भी हिंसा के कारण बैकफुट पर आ गया। यही क्यों यदि दायरे को थोड़ा बड़ा करें तो पंजाब में सिक्खों का हिंसक आंदोलन अंत में असफल हुआ। पूर्वोत्तर के हिंसात्मक गुट क्या हासिल कर पाए? आज भी नक्सली हिंसा के कारण आदिवासियों की मूल मांगे पार्श्व में चली गई हैं और सुरक्षा बलों से संघर्ष मुख्य मुद्दा बन गया है और उसमें भी सफलता के नाम पर अराजकता पनपी है। कश्मीर में विगत 70 वर्षों से हो रहा हिंसक आंदोलन केवल दुश्मनों की कठपुतली ही बना हुआ है, कश्मीरियों को तो अराजकता ही हासिल हुई है। भारत से बाहर निकलें तो लिट्टे जैसे विश्व के सबसे खतरनाक हिंसक गुट को भी अंत में लोकतांत्रिक प्रक्रिया के सामने घुटने टेकने पड़े। इसलिए हमें यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि वर्तमान में हिंसा युग का हथियार नहीं है। हिंसक आंदोलनों में भले ही हम जीतते हुए लगते हों लेकिन गुणात्मक रूप से हार ही होती है। ऐसे आंदोलन के दौरान अनेक आपराधिक वृत्तियों का ग्राफ बढ़ता है और नैतिक स्तर पर नीचे की ओर प्रवाह प्रारम्भ होता है। साथ ही ऐसे आंदोलन का दायरा बहुत सीमित होता है। बहुत कम लोग ऐसे आंदोलन का हिस्सा बन पाते हैं जबकि अहिंसक तरीके से किए जाने वाले आंदोलन की आधार भूमि बड़ी होती है और उसमें समाज के अधिसंख्य लोग अपनी भागीदारी निभा सकते हैं। साथ ही यह बात भी समझ में आनी बहुत जरूरी है कि आंदोलन उपाय नहीं है, आंदोलन संगठित शक्ति का प्रदर्शन मात्र है। शक्ति का सृजन नहीं है और जब तक शक्ति का सृजन न हो तो प्रदर्शन कैसा? पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक समाज चरित्र में लिखा है कि शक्ति के सृजन के बिना प्रदर्शन शक्ति को उभाड़ने जैसा है और कमजोर व्यक्ति की शक्ति को बार-बार उभाड़ना उसके और अधिक कमजोर बनने का कारण बनता है। इसलिए संघ प्राथमिक स्तर पर शक्ति के सृजन में विश्वास करता है और विगत 70 वर्षों से किए जा रहे ऐसे प्रयत्नों का आंशिक प्रभाव प्रकट भी होने लगा है। यदि हम भारत की आजादी के आंदोलन को देखें तो उसका लक्ष्य अंग्रेजों को भगाना था लेकिन पहले आधार भूमि तैयार की गई। सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, धार्मिक कट्टरता आदि पर अलग-अलग लोगों ने काम प्रारम्भ किया और लगभग 100 वर्षों से अधिक समय तक यह काम चला। एक राष्ट्रीय चेतना का निर्माण हुआ और अंत में उस चेतना के समक्ष अंग्रेजों को झुकना पड़ा। हमारे समाज में भी इस प्रकार के विशाल प्रयास की आवश्यकता है और विभिन्न स्तरों पर आवश्यकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ पूज्य तनसिंह जी द्वारा दिए गए मार्गदर्शन की छांव में निरन्तर उधर बढ़ रहा है ऐसे में आवश्यकता उस मार्गदर्शन को समझने की है। ऐसे में हमें हिंसात्मक आंदोलनों के आह्वान को नकारना पड़ेगा और इससे भी आगे हमें बार-बार होने वाले आंदोलनों के आह्वानों की भी उपेक्षा करनी पड़ेगी तब ही हमारा ध्यान शक्ति के सृजन पर केन्द्रित हो पाएगा। शांति के समय सृजित की हुई शक्ति वर्तमान वोट तंत्र में आंदोलनों से कहीं अधिक प्रभावी होती है इसके अनेक उदाहरण हमारे सामने उपलब्ध हैं।

धामोरा (झुंझुनूं) की प्रतिभाएं

झुंझुनूं जिले का धमोरा गांव राजपूतों का बड़ा गांव है। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के परिणामों में गांव की निम्न प्रतिभाओं ने उल्लेखनीय परिणाम दिया।

निकिता कंवर :

शोभा कंवर व महेन्द्रसिंह की पुत्री निकिता कंवर ने 12वीं कक्षा की परीक्षा में 81.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा ने हर विषय में विशेष योग्यता हासिल की है।

ममता कंवर :

छगन कंवर व नरेन्द्रसिंह की पुत्री ममता कंवर ने 12वीं कक्षा की परीक्षा में 80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

प्रवीण सिंह

हंसु कंवर व बजरंगसिंह के पुत्र प्रवीणसिंह ने 12वीं कक्षा में 82.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

देवेन्द्रसिंह

अजय कंवर व रामसिंह के पुत्र देवेन्द्रसिंह ने 12वीं कक्षा की परीक्षा में 81 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

पूनम कंवर

प्रकाश कंवर व नरपतसिंह की पुत्री पूनमकंवर ने 10वीं कक्षा की परीक्षा में 87.33 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

लोकेन्द्रसिंह

प्रकाश कंवर व नरपतसिंह के पुत्र लोकेन्द्रसिंह ने 10वीं कक्षा में 81 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

पूजा कंवर

प्रमोद कंवर व नरेन्द्रसिंह गांव चांवडिया की पुत्री पूजा कंवर ने सीबीएसई बोर्ड से कक्षा 10 में 10 सीजीपीए हासिल किए हैं। छात्रा का ननिहाल धमोरा है और यहीं पढ़ती है।

खरी-खरी

आर-पार की लड़ाई

प्रायः हमारे अनेक नेताओं द्वारा हम आर-पार की लड़ाई का आह्वान सुनते रहते हैं लेकिन जरा विचार करें कि क्या हर लड़ाई आर-पार की होती है? आर-पार का जैसा अर्थ समझ में आता है उसके अनुसार तो आर-पार की लड़ाई अंतिम लड़ाई होती है। उसके बाद उस मुद्दे को लेकर कोई लड़ाई नहीं होती और एक बार चारों ओर शांति और व्यवस्था का साम्राज्य स्थापित हो जाता है। कालांतर में नए सिरे से अव्यवस्था पैदा हो जाए यह अलग बात है लेकिन एक बार तो अराजकता समाप्त हो जाती है। इस दृष्टिकोण से हम कह सकते हैं कि महाभारत की लड़ाई आर-पार की लड़ाई थी। राम-रावण का युद्ध आर-पार की लड़ाई थी। इसके अलावा तो जो लड़ाइयां होती हैं वे एक नई लड़ाई का बीजारोपण होता है। उदाहरण के लिए महाभारत में द्रोणाचार्य अपने एक स्वकल्पित या माने हुए अपमान का बदला लेने के लिए कुरु राजकुमारों की सहायता से पांचालों को परास्त करते हैं। लगता है द्रोणाचार्य ने आर-पार की लड़ाई लड़ ली लेकिन वह लड़ाई आर-पार की नहीं थी बल्कि आगामी समय में द्रुपद वध, द्रोण वध, द्रोपदी के पुत्रों एवं धृष्टद्युम्न के वध, उत्तरा के गर्भ पर आक्रमण और अंत में अश्वथामा के निस्तेज होने का कारण बनी। इस प्रकार आवेश में आकर व्यक्तिगत स्वार्थ एवं जिद की पूर्ति के लिए लड़ी जाने वाली लड़ाइयां आर-पार की लड़ाइयां नहीं हुआ करती। अब जरा विचार करें कि हमारे नेताओं द्वारा नित्य आर-पार की लड़ाई के लिए किए जाने वाले आह्वान क्या इस प्रकृति की लड़ाई है? उत्तर निश्चित रूप से ना में ही आएगा और विडम्बना यह है कि इस प्रकार का आह्वान करने वाले लोग स्वयं भी नहीं जानते कि आर-पार की लड़ाई क्या होती है? आर-पार की लड़ाई के लिए भगवान कृष्ण जैसी कुशलता चाहिए और भगवान राम जैसी मर्यादा की आवश्यकता होती है। आर-पार की लड़ाई अपने अंजाम पर पहुंच कर शांत होती है। आर-पार की लड़ाई जीवन का उद्देश्य होती है। आर-पार की लड़ाई के बाद रावण और उसका परिवार बचता नहीं है। आर-पार की लड़ाई के पश्चात तो केवल पांच पांडवों का साम्राज्य ही बचता है। आर-पार की लड़ाई के सामने औरंगजेब जैसे क्रूर लोगों को भी अपनी जिद छोड़कर दुर्गादास की शर्तों पर समझौता करना पड़ता है। ऐसी आर-पार की लड़ाई के लिए लंबी तैयारी की आवश्यकता होती है और अंत में किसी कृष्ण के या किसी राम के अवतरण की भी आवश्यकता होती है।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि.	24.08.2017 से 27.08.2017 तक	आशापुरा फार्म हाउस, पचानवा (जालोर)। जालोर-तखतगढ़ मार्ग पर स्थित उम्मेदपुर से हरजी रोड पर 3 किमी दूर।
2.	प्रा.प्र.शि.	24.08.2017 से 27.08.2017 तक	राजपूत छात्रावास रानीवाड़ा (जालोर)।
3.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	31.08.2017 से 03.09.2017 तक	आंजना महादेव मंदिर भीलवाड़ा। भीलवाड़ा देवगढ़ मार्ग पर।
4.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	31.08.2017 से 03.09.2017 तक	मडिया (सिरोही)। जालोर से रामसीन होकर, सिरोही से कालन्द्री होकर व रेवदर से जसवंतपुरा होकर मडिया पहुंचे।
5.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	31.08.2017 से 03.09.2017 तक	जालेटी माता मंदिर, कोलर (पाली)। जोजावर व मारवाड़ जंक्शन से बसें उपलब्ध।
6.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	01.09.2017 से 03.09.2017 तक	नरोड़ा (गुजरात) अहमदाबाद स्टेशन से 10 किमी दूर।
7.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	01.09.2017 से 03.09.2017 तक	पडुस्मा (गुजरात) विसनगर माणसा हाईवे, विकास चौराहा से 5 किमी दूर चामुण्डा माता मंदिर।
8.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	01.09.2017 से 04.09.2017 तक	बरजांगसर (बीकानेर) श्री डूंगरगढ़-कातर मार्ग पर। श्री डूंगरगढ़ से (9, 11 व 1.30 बजे बसें उपलब्ध)।
9.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	02.09.2017 से 04.09.2017 तक	मोरचंद (गुजरात)।
10.	बाल शिविर	02.09.2017 से 03.09.2017 तक	नारायण निकेतन बीकानेर
11.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	सगरां, देचू से 3 किमी दूर, जिला-जोधपुर।
12.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	बूढेश्वर महादेव, भूतगांव (सिरोही)। जावाल से 4 किमी दूर।
13.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	संस्कृत विद्यालय, सिवाड़ा। धोरीमन्ना-सांचौर रोड पर स्थित।
14.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	आशापुरा माता मंदिर, नाडोल। रानी, पाली, देसूरी, सादड़ी, बाली से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ। पाली-उदयपुर मेगा हाईवे पर स्थित।
15.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	करगचिया (घाटोल) बांसवाड़ा-जयपुर नेशनल हाईवे 113 से 2 किमी अन्दर।
16.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	वणवासा (डूंगरपुर) साबला-विजवामाता जी रोड पर आसपुर।
17.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	जालेला, मातेश्वरी विद्यालय। शिव से जालेला पहुंचे।
18.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	धनवा (संत भोलाराम जी मंदिर)। मिठोड़ा-सिणधरी रोड पर।
19.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	थोब (कीकाजी बावजी का मंदिर)। बालोतरा-शेरगढ़ मेगा हाईवे पर स्थित।
20.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	पारासरा। फलसूंड व पोकरण से सुबह 7 बजे से हर घंटे बस, बाड़मेर से बस।
21.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	बीठे का गांव, नाचना से बीकमपुर, बीकमपुर से नोख या पोकरण फलोदी से बाप, बाप से नोख हर घंटे बस उपलब्ध।
22.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	बैनाथा, तहसील बीदासर (चूरू)।
23.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	सनाई। जोधपुर से धुंधाड़ा मार्ग पर स्थित है।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज, काली जूती व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

हर्षणी कुमारी

पूर्व सांसद एवं वर्तमान में शिव से विधायक कर्नल मानवेन्द्रसिंह की पुत्री हर्षणी कुमारी ने जुनियर वर्ग में विश्व वाद-विवाद प्रतियोगिता ग्रीस में 2 स्वर्ण एवं 3 रजत पदक हासिल किए हैं।

माहेश्वरी कंवर चौहान

जालोर के पूर्व जिला प्रमुख स्व. गणपतसिंह सियाणा की पौत्री एवं प्रदीपसिंह की पुत्री माहेश्वरी कंवर चौहान ने एशियन शूटिंग चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीतकर समाज का नाम रोशन किया है।

पब्लिक करै पुकार

मदनसिंह सोलंकियातला

अभी हाल ही में मारवाड़ के कुछ जिलो में हुई अतिवृष्टि पर कवि की रचना :

धेनु मरै धर ऊपरां, अबखी पड़ी अपार।
सुणसी कद थूं सांवरा, पब्लिक करै पुकार।।

आभा तूं अंजस मती, गरज मती गवार।
भलपण कीकर भूलियौ, पब्लिक करै पुकार।।

धोळा धोरा धापिया, बरस्यौ धारो धार।
इंदर अखाड़ै आवियो, पब्लिक करै पुकार।।

नाळा खाळा निसरिया, पांणी व्हैगो पार।
मती गरज तूं मेघड़ा, पब्लिक करै पुकार।।

गायां री कद लैवसी, सांवरिया तूं सार।
पथमैड़े री पाळ पर, पब्लिक करै पुकार।।

इंदर न दूं ओळमों, कर जोड़ूं करतार।
सुरगां जावै सुरभियौ, पब्लिक करै पुकार।।

धेनूं धर नै धारणी, धेनू नै मत मार।
सुण जै हेलो सांवरा, पब्लिक करै पुकार।।

बरस मत अब बादळिया, आयो नीर अपार।
आभौ धर पर आवियौ, पब्लिक करे पुकार।।

कठै गया थै कानजी, अबळा रा आधार।
सुणसी कद थूं सांवरा, पब्लिक करै पुकार।।

मिनखां रै वश में नहीं, सो गयी सरकार।।
सुणजै बैगो सांवरा, पब्लिक करै पुकार।।

मत काट भायला

मातुसिंह मानपुरा

जिण पै बैठ करया ठाट भायला,
उण डाळी नै मत काट भायला।

रूखो सुखो खाणो सदा भलेरो,
दूजै री पतळ मत चाट भायला।

मिनखपणै री खेती सकल सुहाणी,
लाट सकै तो नित लाट भायला।

ठाडै रै डर सूं बण डेडरो,
दुबलै री मत बाळ खाट भायला।

मिल जुण रहणो नित मीठो कहणो,
खोट कपट खाई नै तूं पाट भायला।

माट्साब हुए सेवानिवृत्त

श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविर कार्यालय प्रमुख एवं साथी स्वयंसेवकों में माट्साब नाम से पहचाने जाने वाले राजेन्द्रसिंह बोबासर 31 जुलाई को प्रधानाचार्य के पद से सेवानिवृत हुए। पद स्थापन विद्यालय के विद्यार्थियों, साथी कार्मिकों एवं ग्रामवासियों ने समारोहपूर्वक विदाई दी। विदाई समारोह में संघ के जयपुर प्रांत के स्वयंसेवक भी शामिल हुए।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
कृष्णा नगर-I, लालकोठी स्कीम, जयपुर
मो. 9636977490, 0141- 4015747
website : www.springboardindia.org

उज्जैन

बीकानेर

काणेटी

(पृष्ठ एक का शेष) दुर्गा बाबा...

नारायण भारती जी ने दुर्गादास जी को अतुलनीय व्यक्तित्व का धनी एवं त्याग की प्रतिमूर्ति बताया। वरिष्ठ स्वयंसेवक कमलसिंह चूली एवं संभाग प्रमुख देवीसिंह माडपुरा ने दुर्गादास जी को संघ का आदर्श बताते हुए समाज चरित्र अपनाने की बात कही। कार्यक्रम में प्रांत प्रमुख महिपाल सिंह चूली, कमलसिंह चूली, प्रेमसिंह पादरू, पृथ्वीसिंह रामदेरिया, दीपसिंह रणधा आदि उपस्थित थे। बीकानेर संभाग के कोलायत मंडल के मेड़ी का मगरा गांव में चल रहे प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर में 6 अगस्त को दुर्गादास जयंती मनाई जिसमें आसपास के क्षेत्र के सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। जयंती कार्यक्रम नोखा गांव के देववन मठ के महंत संतोषदान महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। प्रताप फाउण्डेशन की ओर से रघुकुल सेवा संस्थान छात्रावास, श्री डूंगरगढ़, बीकानेर में वीर शिरोमणि दुर्गादास जी की जयंती मनाई गई, जिसमें पुन्दलसर, धर्मास, इन्दपालसर, बरजांगसर, जाखासर, केऊ, सतासर, झंझेऊ, जोधासर, नारसीसर, लखासर आदि गांवों से राजपूतों ने भाग लिया। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि दुर्गादास जी का जीवन देश भक्ति एवं स्वधर्म पालन का अनुपम उदाहरण है। उनसे हमें संगठन के गुणों को सीखने की आवश्यकता है, जिससे अल्प साधनों से भी व्यापक सफलता प्राप्त हो सके। रणवीरसिंह लखासर द्वारा पूज्य तनसिंह जी द्वारा रचित 'क्षिप्रा के तीर' का पठन किया गया। पूर्व प्रधान छैलूसिंह, विक्रमसिंह लखासर, रिछपालसिंह, जयसिंह पुन्दलसर, भरतसिंह सेरुणा ने भी समारोह को संबोधित किया। उज्जैन में क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित दुर्गादास जी के समाधि स्थल पर उनकी जयंती श्री क्षत्रिय युवक संघ के तत्वावधान में आयोजित हुई। विक्रमसिंह इन्द्रोई द्वारा 'मेरे वीर दुर्गादास' सहगीत के गायन के साथ सभी ने महापुरुष को पुष्पांजलि अर्पित की। तत्पश्चात् गंगासिंह साजियाली ने 'क्षिप्रा के तीर' का पठन किया। विक्रमसिंह इन्द्रोई ने दुर्गादास जी के जीवन के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने क्षात्र धर्म के पालन हेतु दुर्गादास जी को मध्ययुग का श्रेष्ठतम आदर्श माना है। समारोह की अध्यक्षता डीआईजी पुलिस रमनसिंह सिकरवार ने की। तेज बहादुर सिंह, कानसिंह राठौड़ आदि स्थानीय सहयोगियों का विशेष सहयोग रहा।

वीर दुर्गादास राजपूत छात्रवास पाली में चल रहे प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर में दुर्गादास जी की जयंती श्री क्षत्रिय युवक संघ के केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा तथा सन्त समताराम जी के सान्निध्य में मनाई गई। समारोह को संबोधित करते हुए समतारामजी ने कहा कि राजपूत समाज का इतिहास गौरवशाली रहा है तथा वर्तमान को भी वैसा ही बनाने हेतु संघ द्वारा किए जा रहे संस्कार निर्माण कार्य को व्यापक स्तर पर किए जाने की आवश्यकता है। वीर दुर्गादास राठौड़ स्मृति समिति, जयपुर के तत्वावधान में दुर्गादास जी की जयंती झोटवाड़ा स्थित फतेह निवास मैरिज गार्डन में आयोजित की गई। समारोह में मुख्य अतिथि अजीत कुमार सिंह (आई.ए.एस.) तथा अध्यक्ष गिरिराज सिंह लोटवाड़ा थे। वीर दुर्गादास पर शोध (पीएचडी) करने वाली डॉ. सुलेखा शेखावत जोधपुर इस समारोह की मुख्य वक्ता थीं। गुजरात के मेहसाणा प्रांत में पडुस्मा गांव में मासिक स्नेहमिलन के दौरान दुर्गादास जी की जयंती मनाई गई, जिसमें लगभग 145 बंधुजनों ने भाग लिया। जगतसिंह वलासणा ने विस्तार से दुर्गादास जी का जीवन चरित्र बताया। कार्यक्रम के बाद स्नेह भोज भी हुआ। जैसलमेर के मूलाना गांव के शाखा मैदान में दुर्गादास जी की जयंती मनाई गई जिसमें उपस्थित स्वयंसेवकों ने महापुरुष को पुष्पांजलि अर्पित की और उनके व्यक्तित्व व कृतित्व को जाना। कार्यक्रम में चंदनसिंह, गिरधरसिंह, उगमसिंह, कैलाश सिंह, महिपाल सिंह, दीपसिंह, प्रकाश सिंह आदि उपस्थित थे। मुम्बई में तणेराज शाखा, अंधेरी साप्ताहिक शाखा और नारायण शाखा, भायंदर में दुर्गादास जी की जयंती मनाई गई, जिसमें सैंकड़ों स्वयंसेवकों ने भाग लिया। इस अवसर पर पूज्य तनसिंहजी रचित 'क्षिप्रा के तीर' का पठन किया गया।

बीकानेर में क्षत्रिय सभा द्वारा दुर्गादास जयंती शहर के दुर्गादास सर्किल पर मनाई गई जिसमें समाज के सभी सामाजिक संगठन शामिल हुए। समारोह में दुर्गादासजी के जीवन चरित्र से प्रेरणा लेने की बात कही गई एवं साथ ही क्षत्रिय सभा के नवनियुक्त अध्यक्ष बजरंगसिंह रोयल ने अपनी कार्ययोजना प्रस्तुत की जिसमें क्षत्रिय सभा का विस्तार कर उसमें समाज के अधिकाधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने को महत्त्वपूर्ण बिंदु के रूप में शामिल किया गया। इसके अलावा कन्या छात्रावास के सफल संचालन एवं युवाओं के रोजगार प्रशिक्षण की भी योजना प्रस्तुत की। मुख्य अतिथि केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने राजपूत शांतिधाम के विकास के लिए सांसद कोटे से 6 लाख रुपए शांति धाम के विकास के व 10 लाख रुपए की सहायता रोजगार प्रशिक्षण के लिए देने की घोषणा की। यू.आई.टी. चेयरमैन महावीर रांका ने समाज के लिए जमीन उपलब्ध करवाने एवं महापौर नारायण चौपड़ा ने दुर्गादास राठौड़ पैनोरमा बनाए जाने की घोषणा की। वरिष्ठ स्वयंसेवक कानसिंह बोघेरा सहित अनेक समाज बंधुओं ने विभिन्न प्रकार से आर्थिक सहयोग करने की घोषणा की।

पाली जिले के बिरामी गांव में इस अवसर पर तालाब की पाळ पर स्थापित दुर्गादास जी की मूर्ति का अनावरण किया गया। अनावरण के पश्चात हुए कार्यक्रम में आसपास के गांवों के समाज बंधु एवं जोधपुर, बाड़मेर, जालोर जिले के करणोतों के गांवों से प्रतिनिधि शामिल हुए। कार्यक्रम में विभिन्न वक्ताओं ने दुर्गादास जी के आदर्श चरित्र का वर्णन करते हुए प्रेरणा लेने की बात कही। गुजरात के भावनगर शहर प्रांत व खोडियार प्रांत का कार्यक्रम भावनगर शहर स्थित राजपूत बोर्डिंग में रखा गया जहां जयंती के साथ-साथ यज्ञोपवित धारण करने का कार्यक्रम हुआ। इसी प्रकार धोलेरा शाखा में भी यज्ञोपवीत एवं जयंती कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कच्छ प्रांत के पांध्रो मंडल की कोरियाणी व छेर शाखा में जयंती मनाई गई। बालोतरा स्थित हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में जयंती कार्यक्रम संपन्न हुआ। जोधपुर शहर में प्रतिवर्ष की भांति टाउन हॉल में समारोह पूर्वक जयंती मनाई गई जिसमें वार्षिक पुरस्कारों का वितरण भी किया गया। मसूरिया पहाड़ी पर स्थित दुर्गादास स्मारक पर भी दुर्गादास को नमन किया गया। इस अवसर पर जेडीए जोधपुर के चेयरमैन महेन्द्रसिंह राठौड़ का जोधपुर के भैरोजी चौराहे पर निर्मित मल्टीलेवल ब्रीज का नामकरण दुर्गादास जी के नाम से करवाने पर बहुमान भी किया गया। इसके अलावा दिल्ली, सूरत सहित श्री क्षत्रिय युवक संघ की सभी शाखाओं में दुर्गाबाबा को नमन कर उनके समाज चरित्र को अपनाने का संकल्प लिया गया। जोधपुर के केतु हामां व तनावाड़ा, जैसलमेर के अर्जुना व तेजमालता में चल रहे संघ के शिविरों में भी दुर्गादास जयंती मनाई गई।

प्रतिभाएं

मनस्वी कंवर

महरोली निवासी श्यामसिंह एवं बसंत कंवर की सुपुत्री मनस्वी कंवर शेखावत ने राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से 10वीं की परीक्षा 89.83 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की है।

अदिति कंवर

मेवाड़ के थाणा गांव के निवासी सत्यपालसिंह की पुत्री अदिति कंवर चूंडावत ने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की 12वीं की परीक्षा (कला संकाय) में 91 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

प्रियदर्शी कंवर

प्रियदर्शी कंवर शेखावत पुत्री जोगेन्द्रसिंह शेखावत ने दसवीं की परीक्षा में आर.बी.एस.ई. से 85 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा ने रींगस में पढ़ाई की है।

हर्षिता कंवर चौहान

चित्तौड़गढ़ जिले के कांस्यावाला गांव निवासी गजेन्द्रसिंह चौहान की पुत्री हर्षित चौहान ने राबाउमाधि भादसोड़ा में अध्ययन करते हुए राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की दसवीं कक्षा की परीक्षा में 88.17 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा संघ के तीन शिविर भी कर चुकी है।

बाड़मेर

धोलेरा

पोकरण

(पृष्ठ एक का शेष) शिष्य भाव...

उन्होंने कहा कि सभी संभावनाएं हमारे में हैं और संघ का यह सोच है कि उन सभी संभावनाओं का उपयोग होना चाहिए। हम संसार में जीने की कला सीखें और भौतिक उपलब्धियां भी हासिल करें, संसार से जुड़े लेकिन साथ ही संसार को बनाने वाले से भी जुड़े रहें। इसी का नाम योग है। मानवीयता को न भूलें, इससे निर्मलता आती है और निर्मल हृदय में ईश्वर का वास होता है। क्षत्रिय के घर जन्म लेना हमारे वश में नहीं था लेकिन क्षत्रिय होना हमारा दायित्व है और संघ उसी दायित्व बोध का दूसरा नाम है। कौम के आह्वान को समझें और उसे पूरा करने को प्रस्तुत होवें। स्नेह मिलन को संबोधित करते हुए सामाजिक कार्यकर्ता यशवर्धनसिंह शेखावत ने कहा कि जो लोग अपने मूलभूत सिद्धान्तों से समझौता नहीं करते हैं वे ही बुलंदियों को छूते हैं। इसके लिए उन्होंने विश्व भर की अनेक नामी कंपनियों के उदाहरण दिए और कहा कि संघ अपने मूलभूत सिद्धान्तों पर आगे बढ़ रहा है। उन्होंने वर्तमान युग में निर्वहन के तरीकों को लेकर चर्चा की। प्रशासनिक सेवाओं में जाने को इच्छुक अभ्यर्थियों को प्रशिक्षण देने वाले शिक्षक विजयसिंह लालासर ने अपने अनुभव साझा करते हुए आवश्यक तैयारियों के बारे में बताया।

केन्द्रीय कार्यालय जयपुर के अतिरिक्त हर प्रांत, मंडल एवं शाखा में पूज्य नारायणसिंह जी की जयंती मनाई गई। अनेक स्वयंसेवकों ने व्यक्तिगत स्तर पर अपने घरों में परिवार के साथ पूज्य श्री का स्मरण किया। नागौर के अमर राजपूत छात्रावास में केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ के सानिध्य में जयंती मनाई गई। प्रेमसिंह चाऊ, गजेन्द्रसिंह आऊ आदि ने विचार व्यक्त किए। संचालन प्रांत प्रमुख उगमसिंह आशापुरा ने किया। जालोर जिले के सांचोर शहर के राव बल्लुजी छात्रावास में प्रांत प्रमुख शक्तिसिंह आशापुरा, महेन्द्रसिंह कारोला, स्वरूपसिंह केरिया, जेठुसिंह सिवाड़ा आदि ने शाखा के स्वयंसेवकों के साथ मिलकर जयंती मनाई। पूणे (महाराष्ट्र) के राजपूत सभा भवन में कार्यक्रम रखा गया जिसमें मोखमसिंह सरदारगढ़, हनुमानसिंह बिखरणिया आदि वरिष्ठ स्वयंसेवकों ने पूज्य श्री के साथ के अपने अनुभव साझा किए। संचालन पवनसिंह बिखरणिया ने किया। मुंबई प्रांत में भायंदर व ऐरोली शाखा में जयंती मनाई गई। भायंदर के कार्यक्रम में राजेन्द्रसिंह मीठड़ी, भागीरथसिंह लुणोल, राजेन्द्रसिंह झंजेरा, नीरसिंह सिंघाणा, रघुनाथसिंह सराणा आदि ने विचार व्यक्त किए एवं रणजीतसिंह आलासन ने संचालन किया। ऐरोली शाखा में जेतमालसिंह हरसाणी, अर्जुनसिंह जेला, फतेहसिंह पांचोटा आदि ने पूज्य श्री को शाब्दिक श्रद्धांजलि दी। बालोतरा प्रांत के कल्याणपुर स्थित जगदंबा राजपूत छात्रावास में जयंती मनाई गई जिसमें आसपास के गांवों के समाज बंधु शामिल हुए। प्रांत प्रमुख राणसिंह टापरा व मंडल प्रमुख वीरमसिंह थोब ने अपने विचार व्यक्त किए। चांधन प्रांत के डेलासर गांव में प्रांत प्रमुख तारेन्द्रसिंह झिंझनियाली, भाजपा जिला उपाध्यक्ष हाथीसिंह मूलाना, सगतसिंह चांधन, सह प्रांत प्रमुख रतनसिंह बडोड़ागांव आदि के निर्देशन में जयंती कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में डेलासर, चांधन, डेठा, दवाड़ा, मूलाना आदि गांवों के लोग उपस्थित रहे। दिल्ली की प्रेम चौक पार्क, शास्त्रीनगर शाखा में जयंती मनाई गई। पोकरण के राजपूत छात्रावास में पूर्व विधायक गुलाबसिंह लोहारकी, संभाग प्रमुख सांवलसिंह सनावड़ा, एस.डी.एम. मूलसिंह राजावत, तहसीलदार नारायण गिरी, पत्रकार मनोहर जोशी आदि की उपस्थिति में जयंती मनाई गई। पाली प्रांत की बर शाखा के स्वयंसेवकों द्वारा कल्याणगढ में जयंती मनाई गई। सायला के जालंधर नाथ राजपूत छात्रावास में सायला शाखा ने जयंती मनाई। इस अवसर पर शाखा के स्वयंसेवक व सहयोगी उपस्थित रहे। भावनगर शहर प्रांत व खेडियार प्रांत का सम्मिलित कार्यक्रम खोडियार मंदिर में रखा गया। जालोर की पांचोटा शाखा ने नागणेची मंदिर में जयंती मनाई। सिवाणा के थापन में नागणेची मंदिर में संभाग प्रमुख मूलसिंह काठाड़ी, प्रांत प्रमुख भैरूसिंह पादरू, पृथ्वीसिंह रामदेरिया, हणवंतसिंह मवड़ी आदि की उपस्थिति में पूज्य श्री को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। गुजरात के बल्लभीपुर शिविर में जयंती मनाई गई। गुजरात के भाल प्रांत की खरड व सारिण्ढा शाखा में स्वयंसेवकों ने अपने आदर्श का स्मरण किया। मोहनगढ़ (जैसलमेर) में संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा एवं सुजानगढ़ (चुरु) में केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ की उपस्थिति में जयंती मनाई गई। पाली प्रांत के सोजत मंडल के गुडा कलां गांव में क्षेत्र के स्वयंसेवकों ने जयंती मनाई। उदयपुर के भूपाल नोबल्स संस्थान के शाखा स्थल पर शाखा के स्वयंसेवकों व सहयोगियों ने संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला के निर्देशन में जयंती मनाई। बीकानेर के नोखा मंडल में कीरतासर शाखा में वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावरसिंह भादला के सानिध्य में जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में मोरखाना शाखा के स्वयंसेवक भी शामिल हुए। आहोर में जयसिंह आकोरायादर के आवास पर एवं उथमण (सिरोही) में सुमेरसिंह उथमण के आवास पर स्थानीय स्वयंसेवकों ने जयंती मनाई। गुजरात के सुरेन्द्रनगर में संघ कार्यालय शक्तिधाम में वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा के सानिध्य में जयंती मनाई गई। बाड़मेर के बायतु प्रांत में सीहड़ो की ढाणी सेवनीयाला व मल्लीनाथ मंदिर नौसर में जयंती मनाई गई। प्रांत प्रमुख मूलसिंह चांदेसरा दोनों स्थानों पर कार्यक्रम में शामिल हुए।

किरतासर (नोखा)

अहमदाबाद ग्रामीण प्रांत का कार्यक्रम काणेटी में आयोजित किया गया। कार्यक्रम प्रांत 8.30 बजे से लेकर सायं 4.00 बजे तक आयोजित किया जिसमें पुष्पांजलि, पठन, चर्चा एवं संबोधन सभी तरह के कार्यक्रम रखे गए। धोलेरा शाखा में स्थानीय स्वयंसेवकों ने मिलकर जयंती मनाई गई। बाड़मेर के गुड़ामालानी प्रांत का कार्यक्रम उण्डखा शाखा में रखा गया जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं संभाग प्रमुख देवीसिंह माडपुरा ने पूज्य श्री के जीवन के बारे में विस्तार से बताते हुए अपने अनुभव साझा किए। नागौर के संभागीय कार्यालय आयुवान निकेतन में कुचमान शहर के स्वयंसेवकों ने जयंती मनाई। जोधपुर संभाग में शहर के स्वयंसेवकों ने इस अवसर पर भ्रमण का कार्यक्रम रखा। सभी स्वयंसेवक सिद्धनाथ पहाड़ी पर भ्रमण के लिए पहुंचे एवं वहां बारिश के बीच खुले में बैठकर जयंती मनाई एवं पूज्य श्री को श्रद्धासुमन अर्पित किए। बाड़मेर शहर प्रांत में दो स्थानों पर जयंती मनाई गई। कृष्णा छात्रावास, आदर्श बाल मंदिर छात्रावास, राजपूत छात्रावास व तनाश्रय शाखा के स्वयंसेवकों ने स्थानीय स्वयंसेवकों के साथ मिलकर दानजी की होदी में प्रातः 8 बजे केन्द्रीय कार्यकारी प्रकाशसिंह भुरटिया के सानिध्य में कार्यक्रम रखा वहीं शेष सभी शाखाओं व स्वयंसेवकों ने सायं 5.30 बजे मल्लीनाथ छात्रावास में जयंती मनाई जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक कमलसिंह चूली व संभाग प्रमुख देवीसिंह माडपुरा का सानिध्य मिला। जालोर शहर में स्थानीय स्वयंसेवकों ने मिलकर पुष्पक नगर में जयंती मनाई। इसके अतिरिक्त भी जहां भी संघ के स्वयंसेवक रहते है वहां व्यक्तिगत रूप से या सामूहिक रूप से पूज्य श्री को श्रद्धासुमन अर्पित कर उनके अंदर के शिष्य भाव का आह्वान किया गया एवं उनके मार्ग पर चलने की शक्ति देने की प्रार्थना की गई।

उदयपुर

जालोर

जोधपुर

पुस्तक का विमोचन

संघ के स्वयंसेवक रतनसिंह बडोड़ा गांव व्याख्याता रा.उ.मा.वि. मूलाना (जैसलमेर) द्वारा संकलित एवं लिखित इतिहास पुस्तक 'भाटी वंश की गौरव गाथाएं- भाटी इतिहास' का विमोचन साहित्यकार डॉ. आईदान सिंह भाटी द्वारा रविवार 6 अगस्त को जोधपुर में किया गया। इस अवसर पर गिरधर गोपाल सिंह मालूंगा, सूर्यप्रकाश भार्गव, मनोहरलाल, गिरधरराम, देवीलाल आदि लोग उपस्थित रहे। वक्ताओं ने प्रमाणिक एवं तथ्यपरक इतिहास संकलन के लिए लेखक द्वारा किए गए प्रयास की सराहना की। इस पुस्तक में चंद्रवंश से प्रारम्भ होकर वर्तमान जैसलमेर के भाटी वंश तक वंशावली, उनके गांव आदि का विवरण उपलब्ध है। भाटी वंश के प्रारम्भ से लेकर आज तक के महापुरुषों का जिक्र है। सतियों, सूरमाओं, साहित्यकारों, शहीदों व विभिन्न सम्मान प्राप्त व्यक्तित्वों का भी विवरण इस पुस्तक में संकलित है। यह पुस्तक लेखक रतनसिंह बडोड़ागांव से 9680513413 पर सम्पर्क कर प्राप्त की जा सकती है। लेखक ने इससे पूर्व 'बिहारीदासोत भाटी' नाम से पुस्तक लिखी जिसका विमोचन जून 2015 में माननीय संघ प्रमुख श्री ने किया था। इनके लिए इन्हें 'महारावल हरिराज साहित्य पुरस्कार 2015' से सम्मानित किया गया।

पांचु पुलिस की आपराधिक लापरवाही

विगत दिनों बीकानेर के पांचु थाने के थानाधिकारी सहित पुलिस कर्मियों के एक नाबालिग के साथ बलात्कार एवं हत्या के मामले में किया गया व्यवहार निहायत गैर जिम्मेदाराना एवं आपराधिक लापरवाही का रहा। पुलिस ने इस व्यवहार के कारण मुजरिम के अपराध को कम करके आंका गया एवं पुलिस की मिलीभगत से मौके के सबूतों को नष्ट किया गया। हालांकि पूर्व मंत्री देवीसिंह भाटी के नेतृत्व में हुए आंदोलन के कारण थानाधिकारी सहित कार्मिकों को लाइन हाजिर किया गया लेकिन इससे भी पुलिस की लापरवाही के परिणामों को मिटाया नहीं जा सकता। राज्य सरकार को पुलिस की इस प्रकार की कार्य प्रणाली पर विशेष संज्ञान लेना चाहिए अन्यथा शनैः शनैः शान्त प्रदेश राजस्थान अपराध ग्रस्त क्षेत्र की ओर बढ़ता जा रहा है। वैसे भी विगत दिनों एक समाचार पत्र में छपे सर्वे के मुताबिक प्रदेश के 70 प्रतिशत थानों के व्यवहार से राज्य की जनता संतुष्ट नहीं है, किसी भी जनकल्याणकारी सरकार के लिए यह शर्मनाक स्थिति है।

बणीर स्मारक समिति का शपथ ग्रहण

चुरु स्थित बणीर राजपूत छात्रावास में 30 जुलाई को बणीर स्मारक समिति का शपथ ग्रहण समारोह पंचायती राजमंत्री राजेन्द्रसिंह राठौड़ के आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर नव पदोन्नत एस.पी. केशरसिंह शेखावत का अभिनंदन भी किया गया। समारोह में मंत्री राठौड़ ने अधूरे पड़े बालिका छात्रावास का कार्य समाज के लोगों से सहयोग लेकर शीघ्र पूर्ण करवाने का आश्वासन दिया। एस.पी. केशरसिंह शेखावत ने युवाओं को पथभ्रष्ट होने से बचने की सलाह दी। समारोह को भंवर अजीतसिंह, पदमसिंह दांदू, सज्जनसिंह मठौड़ी, लोकेन्द्रसिंह कोटवाद, प्रतापसिंह जोड़ी आदि ने भी संबोधित किया। संचालन गोविंद सिंह राठौड़ ने किया।

शेखावत बने संभाग प्रभारी

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक एडवोकेट देवेन्द्रसिंह शेखावत (बाज्यास) को राजस्थान युवा बोर्ड में अजमेर संभाग का प्रभारी बनाते हुए राज्य सरकार ने अजमेर, भीलवाड़ा व नागौर जिलों में सरकार के युवा विकास कार्यक्रम की योजनाओं की जानकारी देते हुए युवाओं की भागीदारी बढ़ाने का दायित्व सौंपा है। युवा बोर्ड के तहत स्काउट एवं गाइड, राष्ट्रीय सेवा योजना, एन.सी.सी., नेहरू युवा केन्द्र, जिला क्रीड़ा परिषद् आदि इकाइयां काम करती हैं। इसके अलावा युवा रोजगार मेलों का आयोजन, कौशल विकास केन्द्रों की स्थापना, पारम्परिक व गैर पारम्परिक खेलों को बढ़ावा देना आदि कार्यक्रम भी चलाए जाते हैं।

उपखण्ड अधिकारी की विदाई

पोकरण में पदस्थापित उपखण्ड अधिकारी मूलसिंह राजावत की सेवानिवृत्ति पर राजपूत सेवा समिति पोकरण द्वारा विदाई दी गई।

राजावत ने कार्यक्रम को संबोधत करते हुए कहा कि कोई भी सुधार स्वयं से ही प्रारम्भ होता है। समाज में आगे चलने वाले लोगों एवं उच्च पदों पर बैठे लोगों की जिम्मेदारी अन्यों से अधिक है। लोग उनका अनुसरण करते हैं इसलिए उन्हें समाज की आवश्यकता को देखकर स्वयं से पहल करनी चाहिए। उल्लेखनीय है कि उन्होंने अपने डाक्टर बेटे का विवाह संघ के स्वयंसेवक मदनसिंह बामणिया की पुत्री से बिना टीके और दहेज की मांग से किया है।

कर्मचारी प्रकोष्ठ की बैठक

बाड़मेर संभाग की कर्मचारी प्रकोष्ठ की बैठक 8 अगस्त को बाड़मेर स्थित बी.जी.ए. आश्रम में संपन्न हुई जिसमें सिवाणा में हरिसिंह राणीगांव, पचपदरा में चंदनसिंह थोब, बायतु में जोगसिंह नोसर, बाड़मेर में कमलसिंह गेहुं, चौहटन में झामनसिंह देदुसर, गुड़ामालानी में हिन्दुसिंह इंद्रोई, गडरारोड में परमवीर सिंह ढेलाना, रामसर में समदरसिंह रामसर, सेड़वा में वीरसिंह गंगासरा, धोरीमन्ना में स्वरूपसिंह खारी, सिणधरी में करणसिंह दूधवा, गिड़ा में प्रेमसिंह परेऊ व समदड़ी में नारायण सिंह अजीत को तहसील समन्वयक का दायित्व सौंपा गया। बैठक में केन्द्रीय समन्वयक कृष्णसिंह राणीगांव, केन्द्रीय कार्यकारी प्रकाशसिंह भूरटिया सहित सभी प्रांत प्रमुख भी शामिल हुए। कर्मचारी प्रकोष्ठ के संभाग समन्वयक चंदनसिंह चांदेसरा ने कर्मचारी प्रकोष्ठ की कार्य योजना बताई।

नागौर संभाग के कर्मचारी प्रकोष्ठ की बैठक 6 अगस्त को संघ के संभागीय कार्यालय आयुवान निकेतन, कुचामन में संपन्न हुई जिसमें संभाग समन्वयक नरपतसिंह रताऊ ने संघ के नागौर संभाग प्रमुख शंभुसिंह आसरवा से चर्चा कर जयसिंह मीठड़ी को नागौर जिला समन्वयक का दायित्व सौंपा। इसके अलावा जब्बरसिंह दौलतपुरा को नागौर-खींवसर, जनकपाल सिंह उचाईडा को जायल, नंदसिंह बेड़ को लाडनूं, हुकमसिंह आसरवा को नावां व बजरंगसिंह नैणिया को परबतसर तहसील का संयोजक नियुक्त कर सदस्य बनाने का दायित्व सौंपा गया।

विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष का पर्याय : नीतू कंवर

धमोरा निवासी नीतू कंवर शेखावत ने विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए रैवन्यु अकाउन्टेन्ट तक का सफर तय किया है। अपनी माताजी की इकलौती संतान नीतू कंवर ने विपरीत पारिवारिक परिस्थितियों से संघर्ष कर संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक सवाई सिंह धमोरा सेवानिवृत थानेदार के प्रोत्साहन में गांव में प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण की, टैगोर विद्यालय गुढा गौड़ जी के निदेशक वीरपालसिंह व बाल भारती विद्यालय सीकर के निदेशक बलवंतसिंह चिराना के सहयोग से आगे का अध्ययन किया। सीकर स्थित दुर्गा महिला विकास संस्थान में रहकर बी.एस.सी. की। जयपुर में कोचिंग कर आर.ए.एस. की परीक्षा दी व रैवेन्यु अकाउन्टेन्ट के रूप में चयन हुआ। इनका संघर्ष प्रेरणादायी एवं बधाई का पात्र है।

शाखा में नशा मुक्ति दिवस मनाया

जैसलमेर संभाग के चांधन प्रांत की मूलाना शाखा में 2 अगस्त को नशा मुक्ति दिवस मनाया गया। इसमें मूलाना में संचालित इस्कॉन केन्द्र सदस्य जोरावरसिंह मूलाना ने शास्त्रोक्त आधार पर नशा मुक्ति को प्रगति में बाधक बताया एवं संघ के मार्ग को मानव जीवन के शाश्वत उद्देश्य की ओर ले जाने वाला मार्ग बताया।

MEERA GIRLS SCHOOL, SIKAR

Fully Girls Residential English Medium Educational Institute

Admission Open Class Nursery to X th

Salient Features

* Spacious Campus of 10 acres with lush Green & Peaceful atmosphere.
* Dynamic & Dedicated Staff.
* Hostel Facilities.
* Very reasonable fee structure.
* Unique Teaching Methodology.
* Horse Ridding, Shooting, Swimming, Marshal Art.
* Advanced Co- curricular activities.

(A Unit of Durga Mahila Vikas Sansthan, Sikar)
Dhod Road, Bikaner by pass, Nathawatpura, Sikar (Raj.)
Ph. 01572-296512,
Mob. 9929048222, 9414052041, 9414243169, 9414211465

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org